



अप्रैल: 2026

वर्ष : 9 अंक : 7

# सिफरी मासिक समाचार



महावीर  
जयंती  
की शुभकामनाएं

# नील क्रांति की ओर अग्रसर



निदेशक की कलम से



## विज्ञान, सहयोग और संकल्प से सशक्त होती नीली अर्थव्यवस्था

भारत में अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी क्षेत्र आज केवल उत्पादन का माध्यम नहीं, बल्कि ग्रामीण आजीविका, महिला सशक्तिकरण और सतत विकास का एक सशक्त आधार बनकर उभर रहा है। हाल के विभिन्न प्रयास—चाहे वे प्रशिक्षण, एक्सपोज़र विज़िट, तकनीकी हस्तक्षेप या जन-जागरूकता कार्यक्रम हों—यह स्पष्ट करते हैं कि जब विज्ञान और समाज का प्रभावी समन्वय होता है, तब परिवर्तन अनिवार्य हो जाता है।

सही मार्गदर्शन, प्रशिक्षण और संस्थागत सहयोग मिलने पर ग्रामीण महिलाएँ भी आर्थिक आत्मनिर्भरता की नई ऊँचाइयों को छू सकती हैं। श्रीमती सुजाता भुयान इसका उत्कृष्ट उदाहरण हैं। उन्होंने संस्थान द्वारा आयोजित “जलाशयों में केज कल्चर” प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भाग लेकर वैज्ञानिक मत्स्य पालन, जल प्रबंधन, आहार अनुकूलन तथा रोग नियंत्रण से जुड़ी व्यावहारिक जानकारी हासिल की।

गृहिणी से एक सफल एकाप्रेन्योर बनने तक की उनकी यात्रा इस परिवर्तन का सशक्त प्रमाण है। यह केवल उनकी व्यक्तिगत सफलता की कहानी नहीं, बल्कि इस बात का भी संकेत है कि केज कल्चर जैसी उन्नत तकनीकों को अपनाकर सीमित संसाधनों में भी उल्लेखनीय उपलब्धियाँ प्राप्त की जा सकती हैं। दूसरी ओर, वैज्ञानिकों और विस्तार तंत्र को सशक्त बनाने हेतु आयोजित एक्सपोज़र विज़िट, प्रशिक्षण कार्यक्रम और तकनीकी संवाद इस क्षेत्र की दीर्घकालिक मजबूती सुनिश्चित करते हैं। GIS, ड्रोन और R-आधारित विश्लेषण जैसे आधुनिक उपकरणों का उपयोग यह दर्शाता है कि मात्स्यिकी अब पारंपरिक सीमाओं से आगे बढ़कर डेटा-आधारित और वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपना रही है।

पूर्वोत्तर और अन्य क्षेत्रों में आयोजित जागरूकता एवं इनपुट वितरण कार्यक्रम यह इंगित करते हैं कि सरकार और अनुसंधान संस्थान केवल तकनीक विकसित करने तक सीमित नहीं हैं, बल्कि उसे लाभार्थियों तक पहुँचाने के लिए भी प्रतिबद्ध हैं। इससे न केवल उत्पादन में वृद्धि होती है, बल्कि कृषक समुदायों में आत्मविश्वास और सहभागिता भी बढ़ती है।

अन्ततः, यह कहना उचित होगा कि भारत की “ब्लू इकोनॉमी” का भविष्य इसी त्रिकोण—विज्ञान, नीति और मानव संकल्प—पर आधारित है। यदि इन प्रयासों को निरंतरता और विस्तार दिया जाए, तो यह क्षेत्र न केवल आर्थिक समृद्धि, बल्कि सामाजिक परिवर्तन का भी सशक्त माध्यम बन सकता है।

धन्यवाद।

(निदेशक)

## शीतकालीन अध्ययन दौरे के दौरान भारतीय प्रशासनिक सेवा के प्रशिक्षु अधिकारियों का संस्थान भ्रमण



शीतकालीन अध्ययन दौरे के अंतर्गत भारतीय प्रशासनिक सेवा (IAS) के प्रशिक्षु अधिकारियों ने भा.कृ.अनु.परि.-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर का भ्रमण किया। इस दौरे का उद्देश्य प्रशिक्षुओं को अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी में वैज्ञानिक अनुसंधान की भूमिका तथा राष्ट्रीय विकास लक्ष्यों में इसके योगदान से अवगत कराना था।

संस्थान के निदेशक, डॉ. प्रदीप डे ने प्रशिक्षुओं के साथ संवाद करते हुए वर्तमान अनुसंधान गतिविधियों और विकसित भारत 2047 के दृष्टिकोण के अनुरूप भविष्य की योजनाओं पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि वैज्ञानिक नवाचार और प्रौद्योगिकी आधारित हस्तक्षेप किस प्रकार मात्स्यिकी क्षेत्र को सुदृढ़ कर रहे हैं।

इस अवसर पर संस्थान के विभिन्न प्रभागों के प्रमुखों (HoDs) ने प्रस्तुतियों के माध्यम से मात्स्यिकी के कार्यक्षेत्र, प्रमुख अनुसंधान पहल तथा सतत मात्स्यिकी विकास में इसके योगदान को विस्तार से प्रस्तुत किया। प्रशिक्षुओं ने वैज्ञानिकों के साथ सक्रिय संवाद द्वारा



मात्स्यिकी अनुसंधान में सहायक आजीविका सशक्तिकरण, नीतिगत समर्थन और प्राकृतिक संसाधनों के सतत प्रबंधन में महत्वपूर्ण भूमिका को बताया गया।

यह भ्रमण प्रशिक्षुओं के लिए अत्यंत ज्ञानवर्धक और प्रेरणादायक सिद्ध हुआ तथा इसने साक्ष्य-आधारित नीति निर्माण और वैज्ञानिक नवाचार के महत्व को रेखांकित किया, जो दीर्घकालिक राष्ट्रीय विकास लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए आवश्यक हैं।

## आकांक्षी जिले मेघालय के जनजातीय मत्स्य किसानों को CIFRI प्रौद्योगिकी से सशक्तिकरण



भा.कृ.अनु.परि.—केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान ने मेघालय के आकांक्षी जिले री-भोई के जनजातीय मत्स्य किसानों को सशक्त बनाने के उद्देश्य से “फील्ड डे-सह-इनपुट वितरण कार्यक्रम” का आयोजन किया। यह कार्यक्रम 11 मार्च 2026 को मेघालय राज्य मत्स्य अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान (MSFR&TI), मावपुन में ICAR-CIFRI क्षेत्रीय केंद्र,

गुवाहाटी और मत्स्य विभाग, मेघालय सरकार के सहयोग से, संस्थान की जनजातीय उप-योजना (TSP) के अंतर्गत आयोजित किया गया।

कार्यक्रम में लगभग 70 प्रतिभागियों—जिनमें मत्स्य किसान, वैज्ञानिक, अधिकारी एवं मीडिया प्रतिनिधि शामिल थे—ने भाग लिया। इस अवसर पर संस्थान द्वारा विकसित “CIFRI CAGEGROW” फ्लोटिंग फिश फीड को बढ़ावा दिया गया, जो वैज्ञानिक मत्स्य पालन में उत्पादन वृद्धि के लिए महत्वपूर्ण है। कार्यक्रम के दौरान 50 जनजातीय किसानों को कुल 5,000 किलोग्राम फीड वितरित किया गया।

उद्घाटन सत्र में श्री प्रिकजांग एस. आर. मराक ने मत्स्य क्षेत्र के विकास में विभिन्न हितधारकों के सहयोग की आवश्यकता पर बल दिया और संस्थान के तकनीकी सहयोग की सराहना की। डॉ. प्रणोब दास ने कार्यक्रम के उद्देश्य एवं संस्थान की अनुसंधान गतिविधियों की जानकारी दी, जबकि डॉ. एस. सी. एस. दास और श्री ए. काकती ने मत्स्य आहार, फीडिंग प्रबंधन और मछलियों के स्वास्थ्य पर विस्तृत मार्गदर्शन दिया।

तकनीकी सत्र और संवादात्मक चर्चा में किसानों की जिज्ञासाओं का समाधान किया गया तथा उन्हें सतत मत्स्य पालन अपनाने के लिए प्रेरित किया गया। किसानों ने इस पहल की सराहना करते हुए भविष्य में भी ऐसे तकनीकी सहयोग की अपेक्षा व्यक्त की।



## भाकृअनुप-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान में मछुआरा समुदाय की महिलाओं के साथ अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस का आयोजन



भाकृअनुप-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान ने 08 मार्च 2026 को अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस का आयोजन किया, जिसमें अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी और जलीय कृषि में महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डाला गया। यह कार्यक्रम संयुक्त राष्ट्र द्वारा वर्ष 2026 को “अंतरराष्ट्रीय महिला किसान वर्ष (IYWF)” घोषित किए जाने के अनुरूप आयोजित किया गया, जो कृषि एवं संबद्ध क्षेत्रों में महिलाओं के बढ़ते योगदान को मान्यता देता है।

पश्चिम बंगाल की गंगा नदी एवं आर्द्रभूमि तंत्र से जुड़ी महिला मछुआरों ने इस समारोह में भाग लिया। इस अवसर पर संस्थान के निदेशक, डॉ. प्रदीप डे ने अपने संबोधन में अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी क्षेत्र में महिलाओं के योगदान के महत्व पर बल दिया। उन्होंने महिला मछुआरों को सतत मत्स्य प्रबंधन, अन्तर्स्थलीय खुले जल संसाधनों के जिम्मेदार उपयोग तथा मत्स्य आधारित आजीविका को सुदृढ़ करने के लिए सक्रिय भागीदारी हेतु प्रेरित किया।

कार्यक्रम के दौरान विस्तार एवं प्रशिक्षण प्रकोष्ठ की प्रभारी, डॉ. अपर्णा राय द्वारा एक संक्षिप्त प्रस्तुति दी गई, जिसमें मत्स्य गतिविधियों में महिलाओं की विविध भूमिकाओं को प्रदर्शित किया गया। इसमें तालाबों में मछली पालन, जाल एवं उपकरणों की तैयारी, मछली पकड़ना, प्रसंस्करण तथा विपणन जैसे कार्य शामिल हैं। उन्होंने यह इंगित किया कि इन गतिविधियों में महिलाओं की भागीदारी पुरुषों के समान है, किंतु उनके योगदान को अक्सर पर्याप्त मान्यता नहीं मिल पाती है।

कार्यक्रम के दौरान सहभागी महिला मछुआरों ने भी अपने अनुभव साझा किए तथा मत्स्य क्षेत्र में अधिक सहयोग, प्रशिक्षण





और अवसरों की अपेक्षा व्यक्त की। उन्हें भविष्य में क्षमता निर्माण एवं आजीविका समर्थन कार्यक्रमों के लिए संस्थान के साथ जुड़े रहने के लिए प्रोत्साहित किया गया।

इस आयोजन ने अन्तर्स्थलीय मत्स्यिकी में महिलाओं की भागीदारी को स्वीकार करने और सशक्त बनाने की आवश्यकता को रेखांकित किया। संस्थान ने वर्ष 2026 में महिला मत्स्य कृषकों और मछुआरों के विकास और उत्थान देने की अपनी प्रतिबद्धता दोहराई, जो मत्स्य क्षेत्र में समावेशी विकास को बढ़ावा देने और “विकसित भारत 2047” के राष्ट्रीय

दृष्टिकोण के अनुरूप है।

महिला दिवस के अवसर पर वैज्ञानिकों और महिला मछुआरों के बीच चर्चा हुई, जिसमें निम्नलिखित मुद्दे सामने आए।

1. महिला मछुआरों की भूमिका का आकलन : अन्तर्स्थलीय खुला जल मत्स्यिकी (नदियाँ, जलाशय, बाढ़ क्षेत्र, झीलें, आर्द्रभूमि) में महिला मछुआरों की भूमिका का मूल्यांकन करने के लिए एक सूचकांक (इंडेक्स) विकसित किया जा सकता है, ताकि उनके लिए विशिष्ट सिफारिशें तैयार की जा सकें।
2. सामुदायिक मत्स्य अधिकार एवं नीतिगत सुधार : महिला स्वयं सहायता समूहों (SHGs) को सामुदायिक मत्स्य पालन अधिकार प्रदान किए जा सकते हैं तथा जलाशयों और आर्द्रभूमियों के लिए लैंगिक समावेशी पट्टा (लीज) नीतियाँ विकसित की जा सकती हैं।
3. महिला स्वयं सहायता समूहों का सशक्तिकरण और समन्वय : महिला स्वयं सहायता समूहों को बढ़ावा दिया जाए तथा अन्य परियोजनाओं, कार्यक्रमों और योजनाओं के साथ उनके समन्वय और जुड़ाव को प्रोत्साहित किया जाए। उपरोक्त बिंदु महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए सामाजिक, आर्थिक, संस्थागत और तकनीकी बाधाओं को दूर करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम हैं।



## प्रौद्योगिकी से सेतु निर्माण: पश्चिम जयंतिया हिल्स, मेघालय के जनजातीय किसानों को ICAR-CIFRI का सहयोग



वैज्ञानिक मत्स्य पालन को बढ़ावा देने और सतत आजीविका को सुदृढ़ करने के उद्देश्य से, भा.कृ.अनु.परि.-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान ने पश्चिम जयंतिया हिल्स, मेघालय में एक प्रभावशाली “फील्ड डे-सह-इनपुट वितरण कार्यक्रम” का आयोजन किया। यह कार्यक्रम जोवाई स्थित मत्स्य अधीक्षक कार्यालय में संस्थान के क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी तथा मत्स्य विभाग, मेघालय सरकार के सहयोग से, संस्थान की जनजातीय उप-योजना (TSP) के अंतर्गत आयोजित किया गया।

कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण ICAR-CIFRI द्वारा विकसित विशेष फ्लोटिंग फिश फीड “CIFRI CAGEGROW” का प्रचार-प्रसार था। यह उन्नत आहार तकनीक मछलियों की वृद्धि को अधिकतम करने और जल गुणवत्ता को बनाए रखने में सहायक है, जिससे सतत उत्पादन सुनिश्चित होता है। कार्यक्रम में मत्स्य किसान, सरकारी अधिकारी और मीडिया प्रतिनिधि सहित लगभग 70 प्रतिभागियों ने भाग लिया। उद्घाटन सत्र में मत्स्य अधीक्षक श्री प्रेशियस एस. सूटिंग ने राज्य में मत्स्य क्षेत्र के आधुनिकीकरण के लिए विभिन्न हितधारकों के सहयोग के महत्व पर बल दिया। उन्होंने बताया कि पूर्व में वितरित “CIFRI CAGEGROW” से किसानों को सकारात्मक परिणाम प्राप्त हुए हैं।

डॉ. प्रणोब दास ने मेघालय के मध्य-ऊँचाई वाले क्षेत्रों के लिए उपयुक्त मत्स्य प्रौद्योगिकियों के विकास पर प्रकाश डाला, जबकि डॉ. एस. सी. एस. दास और श्री ए. काकती ने गुणवत्तापूर्ण मत्स्य बीज, संतुलित आहार प्रबंधन और मछलियों के स्वास्थ्य पर विस्तृत जानकारी दी। साथ ही, किसानों को राज्य सरकार की विभिन्न योजनाओं के बारे में भी अवगत कराया गया। कार्यक्रम के अंत में 50



जनजातीय मत्स्य किसानों को कुल 5,000 किलोग्राम “CIFRI CAGEGROW” फीड वितरित किया गया। यह सहायता मत्स्य उत्पादन बढ़ाने और किसानों की आय में सुधार लाने में सहायक सिद्ध होगी। यह पहल आधुनिक तकनीक और वैज्ञानिक ज्ञान के माध्यम से जनजातीय समुदायों को सशक्त बनाने तथा क्षेत्र में सतत अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी विकास को गति देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

## प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि (PM-KISAN) योजना की 22वीं किस्त जारी किए जाने का लाइव प्रसारण



भा.कृ.अनु.परि.—केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान में 13 मार्च 2026 को प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि (PM-KISAN) योजना की 22वीं किस्त जारी किए जाने का लाइव प्रसारण आयोजित किया गया। यह प्रसारण माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी का यह प्रसारण सायं 5:00 बजे से किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य मत्स्य किसानों सहित कृषि समुदाय को इस महत्वपूर्ण पहल से अवगत कराना था।

इस अवसर पर नवाबगंज, बंदेल और सेरमपुर क्षेत्र से आए अनेक किसान भी उपस्थित रहे। प्रतिभागियों ने कार्यक्रम को उत्साहपूर्वक देखा और किसानों को समय पर वित्तीय सहायता प्रदान करने के लिए सरकार के प्रयासों की सराहना की। कार्यक्रम के दौरान प्रतिभागियों के बीच सकारात्मक चर्चा हुई, जिससे कृषि विकास और ग्रामीण समृद्धि के प्रति विश्वास और आशा का वातावरण बना। इस कार्यक्रम में संस्थान के वैज्ञानिकों, तकनीकी कर्मियों, प्रशासनिक एवं सहायक स्टाफ तथा शोधार्थियों सहित कुल 223 लोगों ने



भाग लिया। लाइव प्रसारण के दौरान प्रधानमंत्री ने देशभर के किसानों को संबोधित करते हुए कृषि क्षेत्र की महत्वपूर्ण भूमिका और खाद्य सुरक्षा में उसके योगदान पर बल दिया।

कार्यक्रम के पर प्रतिभागियों ने इस प्रकार की योजनाओं को किसानों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण बताया। यह लाइव प्रसारण न केवल जानकारीपूर्ण रहा, बल्कि प्रेरणादायक भी सिद्ध हुआ, जिसने किसानों के साथ संस्थागत जुड़ाव को और मजबूत किया।

## उमियम जलाशय, मेघालय के तटवर्ती समुदायों को ICAR-CIFRI का तकनीकी सहयोग



भा.कृ.अनु.परि.—केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान ने मेघालय के उमियम जलाशय के तटवर्ती समुदायों के लिए सतत मात्स्यिकी विकास को बढ़ावा देने हेतु महत्वपूर्ण तकनीकी सहयोग प्रदान किया। इसी क्रम में संस्थान के क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी ने री-भोई फार्मर्स यूनियन (RFU) तथा मत्स्य विभाग, मेघालय सरकार के सहयोग से 13 मार्च 2026 को

उमसिंग में “फील्ड डे-सह-इनपुट वितरण कार्यक्रम” का आयोजन किया।

कार्यक्रम में लगभग 70 प्रतिभागियों—जिनमें मछुआरे, मत्स्य किसान, वैज्ञानिक एवं अधिकारी शामिल थे—ने सक्रिय भागीदारी की। इस अवसर पर संस्थान द्वारा विकसित “CIFRI CAGEGROW” फ्लोटिंग फिश फीड को एक महत्वपूर्ण तकनीकी इनपुट के रूप में प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम के दौरान कुल 5,000 किलोग्राम फीड का वितरण किया गया, जिससे 50 जनजातीय मछुआरा परिवार लाभान्वित हुए। यह पहल केज कल्चर सहित वैज्ञानिक मत्स्य पालन पद्धतियों को बढ़ावा देने और उत्पादन में वृद्धि के लिए उपयोगी सिद्ध होगी।

कार्यक्रम के दौरान वैज्ञानिकों ने पहाड़ी क्षेत्रों में उपयुक्त मत्स्य पालन तकनीकों, केज कल्चर प्रणाली तथा संतुलित आहार प्रबंधन के महत्व पर विस्तार से जानकारी दी। साथ ही, संस्थान और RFU के बीच 2019 से चल रहे सहयोगात्मक प्रयासों को भी रेखांकित किया गया, जिनके परिणामस्वरूप उमियम जलाशय में केज कल्चर सफलतापूर्वक अपनाया गया है।

इस कार्यक्रम ने न केवल स्थानीय समुदायों को वैज्ञानिक ज्ञान से सशक्त बनाया, बल्कि उनकी आजीविका में सुधार और आय वृद्धि की दिशा में भी नई संभावनाएँ प्रस्तुत कीं। यह पहल क्षेत्र में सतत अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी विकास और सामुदायिक सशक्तिकरण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। कार्यक्रम का समापन श्री अलेक्जेंडर रोंगहांग द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ। यह पहल क्षेत्र में सतत मात्स्यिकी विकास, वैज्ञानिक सहयोग और ग्रामीण आजीविका सुदृढ़ीकरण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम सिद्ध हुई।

### एनईएच पहल के अंतर्गत सिक्किम के मत्स्य किसानों हेतु जागरूकता-सह-इनपुट वितरण कार्यक्रम

भा.कृ.अनु.परि.—केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान (ICAR-CIFRI), क्षेत्रीय केंद्र गुवाहाटी द्वारा, भा.कृ.अनु.परि.—कृषि विज्ञान केंद्र (KVK), पूर्वी सिक्किम के सहयोग से 17 मार्च 2026 को रानीपूल में एक “जागरूकता-सह-इनपुट वितरण कार्यक्रम” का सफल आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम संस्थान के निदेशक, ICAR-CIFRI के गुवाहाटी क्षेत्रीय केंद्र प्रमुख, तथा ICAR-KVK रानीपूल के प्रमुख, के मार्गदर्शन में आयोजित हुआ।

इस कार्यक्रम में कुल 40 प्रतिभागियों—जिनमें किसान, कृषि विज्ञान केंद्र, रानीपूल तथा संस्थान के गुवाहाटी क्षेत्रीय केंद्र के अधिकारी भी शामिल थे। कार्यक्रम के अंतर्गत 30 लाभार्थियों (जिनमें 7 महिलाएँ शामिल थीं) को जलकुंड (Jalkund) निर्माण हेतु



प्लास्टिक लाइनिंग सामग्री जैसे आवश्यक इनपुट वितरित किए गए, ताकि वर्षा जल संचयन आधारित मत्स्य पालन तकनीक को शीघ्र अपनाया जा सके।

कार्यक्रम का शुभारंभ विषय विशेषज्ञ (SMS) श्री बोनिफेस लेपचा के स्वागत भाषण से हुआ, जिसमें उन्होंने इस पहल की पृष्ठभूमि और महत्व पर प्रकाश

डाला। इसके पश्चात डॉ. प्रकाश शर्मा, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख, KVK पूर्वी सिक्किम ने अपने विचार साझा करते हुए जालकुंड के माध्यम से वर्षा जल संचयन की महत्ता और इसे मत्स्य-आधारित कृषि प्रणाली में एकीकृत करने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने बताया कि सीमित सिंचाई संसाधनों वाले क्षेत्रों में जालकुंड में संग्रहित वर्षा जल जलीय कृषि के लिए अत्यंत उपयोगी है और इससे खेती की उत्पादकता एवं स्थायित्व में उल्लेखनीय वृद्धि हो सकती है। उन्होंने यह भी कहा कि मत्स्य पालन को फसल और पशुपालन के साथ जोड़कर किसान संसाधनों का बेहतर उपयोग कर सकते हैं, पोषक तत्वों का पुनर्चक्रण कर सकते हैं और आय के अनेक स्रोत विकसित कर सकते हैं, जिससे उनकी आजीविका और आर्थिक सुरक्षा मजबूत होती है।



डॉ. नीति शर्मा, वरिष्ठ वैज्ञानिक, ICAR-CIFRI ने “जलकुंड तकनीक” के वैज्ञानिक आधार और उद्देश्यों को विस्तार से

समझाया। उन्होंने बताया कि यह तकनीक एकीकृत अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी और सतत कृषि पद्धतियों के माध्यम से आजीविका संवर्धन में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। विशेष रूप से पूर्वोत्तर के पर्वतीय क्षेत्रों में, यह जल की कमी की समस्या का समाधान करते हुए जलवायु-सहिष्णु कृषि को बढ़ावा देती है। इसके अतिरिक्त, श्री बोनिफेस लेपचा ने प्रतिभागियों को जालकुंड के डिजाइन, मापदंड और निर्माण तकनीकों के बारे में विस्तृत जानकारी दी, जिससे किसान इस तकनीक को अपने खेतों में प्रभावी ढंग से लागू कर सकें। कार्यक्रम के अंतर्गत KVK फार्म का एक फील्ड विज़िट भी आयोजित किया गया, जहाँ प्रतिभागियों ने कार्यशील जालकुंड प्रणाली और उसके एकीकृत कृषि में व्यावहारिक उपयोग को प्रत्यक्ष रूप से देखा और समझा।

### संस्थान में वर्चुअल मोड में पेंशन अदालत की बैठक

हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के निर्देशानुसार संस्थान में दिनांक 17 मार्च 2026 को वर्चुअल मोड में पेंशन अदालत की बैठक हुई। भाकृअनुप-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान एक पेंशन अधिकरण इकाई (इकाई -14) है जिसे परिषद के कई संस्थानों के पेंशन सम्बन्धी कार्यों के लिए अधिकृत किया गया है। यह बैठक संस्थान के निदेशक की अध्यक्षता में सफलतपूर्वक सम्पन्न हुआ जिसमें पेंशन संबंधी मुद्दों और शिकायतों पर चर्चा की गयी। इस बैठक में भाकृअनुप-राष्ट्रीय याक अनुसंधान संस्थान, दिराङ्ग, अरुणाचल प्रदेश; भाकृअनुप- उत्तर पूर्वी पर्वतीय क्षेत्र अनुसंधान परिसर, उमीयाम, मेघालय के साथ अन्य पेंशन प्राप्तकर्ताओं ने ऑनलाइन रूप से भाग लिया। हालांकि इस बैठक में शिकायतों की संख्या शून्य थी जो इस संस्थान के लिए एक सराहना का विषय है।

## ICAR-CIFRI @ 80: उत्कृष्टता की विरासत और जेन-ज़ी को ब्लू इकोनॉमी की ओर प्रेरित करता एक ऐतिहासिक उत्सव



भा.कृ.अनु.परि.-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान ने अपने 80वें स्थापना दिवस के अवसर पर अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी विज्ञान में आठ दशकों की उत्कृष्टता का गौरवपूर्ण उत्सव मनाया। यह अवसर केवल उपलब्धियों के स्मरण तक सीमित नहीं रहा, बल्कि विकसित भारत @2047 की परिकल्पना के अनुरूप एक सशक्त, नवाचार-आधारित और समावेशी ब्लू इकोनॉमी की दिशा में संस्थान की प्रतिबद्धता को भी रेखांकित करता है।

वर्ष 1947 में स्थापित इस संस्थान ने अनुसंधान, प्रशिक्षण और विस्तार के माध्यम से देश में सतत अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी विकास को नई दिशा दी है। प्रेरित प्रजनन, समेकित मत्स्य पालन, जलाशय एवं आर्द्रभूमि प्रबंधन, हिलसा संरक्षण, एनक्लोजर कल्चर तथा

नदी रैचिंग जैसी तकनीकों ने भारत के मत्स्य क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन लाए हैं। आज भारत विश्व का दूसरा सबसे बड़ा मत्स्य उत्पादक देश है, जिसमें अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी का योगदान 75% से अधिक है, जो देश की खाद्य एवं पोषण सुरक्षा को सुदृढ़ करता है।

समारोह का शुभारंभ केक काट कर हुआ। अपने स्वागत संबोधन में संस्थान के निदेशक डॉ. प्रदीप डे ने संस्थान की गौरवशाली यात्रा, अंतर्स्थलीय खुले जल की मात्स्यिकी, जैव विविधता संरक्षण तथा हितधारकों के सशक्तिकरण में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डाला। उन्होंने जलवायु-संवेदनशील और





अत्याधुनिक तकनीकों—जैसे ड्रोन एवं सेंसर-आधारित प्रणालियों—के उपयोग को बढ़ावा देने की आवश्यकता पर बल दिया। साथ ही, ब्लू इकोनॉमी और “वन हेल्थ” दृष्टिकोण के अनुरूप पारिस्थितिक संतुलन, मानव कल्याण और आजीविका सुरक्षा के प्रति संस्थान की प्रतिबद्धता को दोहराया।

इस अवसर पर आयोजित कार्यक्रम की एक विशेष उपलब्धि थी—PM SHRI योजना के अंतर्गत पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय संख्या-1, आईआईटी खड़गपुर के छात्रों के लिए आयोजित शैक्षिक एक्सपोजर विज़िट। कक्षा 10 के 68 छात्रों और पाँच शिक्षकों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया, जिसने उन्हें विज्ञान, नवाचार और उद्यमिता के वास्तविक संसार से जोड़ा।

उद्घाटन सत्र में डॉ. प्रदीप डे ने जेन-ज़ी छात्रों को संबोधित करते हुए कहा कि युवाओं को प्रारंभिक स्तर पर वैज्ञानिक दृष्टिकोण से

जोड़ना अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि ऐसे प्रयास छात्रों को नौकरी खोजने वालों से आगे बढ़ाकर रोजगार सृजक बनने के लिए प्रेरित करते हैं, जिससे देश की ब्लू इकोनॉमी को नई गति मिलती है।

इस एक्सपोजर विज़िट के दौरान छात्रों ने अत्याधुनिक प्रयोगशालाओं एवं अनुसंधान सुविधाओं का अवलोकन किया, जहाँ उन्होंने जलीय जैव विविधता, पर्यावरणीय निगरानी तथा सतत संसाधन प्रबंधन के व्यावहारिक पहलुओं को समझा। कार्यक्रम का प्रमुख आकर्षण एक्वेरियम और अलंकरणीय मत्स्य इकाइयाँ रहीं, जहाँ छात्रों को आधुनिक जलीय





कृषि तकनीकों और मत्स्य-आधारित उद्यमों की संभावनाओं से परिचित कराया गया। वैज्ञानिकों एवं तकनीकी विशेषज्ञों के साथ संवादात्मक सत्रों ने इस अनुभव को और अधिक समृद्ध बनाया।

समारोह में अनेक विशिष्ट अतिथियों ने भी अपनी उपस्थिति दर्ज कराई और संस्थान के योगदानों की सराहना की। उन्होंने संस्थान की उन तकनीकों को रेखांकित किया, जिन्होंने मत्स्य क्षेत्र में “ब्लू रिवोल्यूशन” को गति दी तथा किसानों और मछुआरों की आय वृद्धि में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

इस अवसर पर “सतत ब्लू इकोनॉमी हेतु स्थिति-विशिष्ट प्रौद्योगिकी लक्षितकरण” विषय पर एक क्रिएटिव सॉल्यूशंस लैब का आयोजन किया गया, जिसमें विभिन्न सरकारी योजनाओं के साथ तकनीकी समन्वय पर विचार-विमर्श किया गया। कार्यक्रम में विभिन्न आर्द्रभूमि क्षेत्रों से आई 48 महिला मछुआरों की सक्रिय भागीदारी ने महिला सशक्तिकरण की दिशा में एक महत्वपूर्ण संदेश दिया।

इसके साथ ही “CIFRI-CleanMeen” नामक एक पर्यावरण-अनुकूल उत्पाद का विमोचन किया गया, जो जल में घुलनशील पौध-आधारित अर्क से निर्मित है और अवांछित मछलियों को नियंत्रित करने में सक्षम है, जबकि अन्य जलीय जीवों को सुरक्षित रखता है। एक महत्वपूर्ण प्रकाशन का भी लोकार्पण किया गया तथा मेधावी छात्रों को सम्मानित किया गया।

यह आयोजन केवल अतीत की उपलब्धियों का उत्सव नहीं, बल्कि भविष्य की दिशा तय करने वाला एक सशक्त मंच भी रहा—जहाँ विज्ञान, शिक्षा, नवाचार और युवा शक्ति का संगम देखने को मिला। सिफरी की यह 80 वर्षों की यात्रा न केवल उत्कृष्टता की कहानी है, बल्कि यह एक ऐसे भविष्य का संकेत भी है, जहाँ सशक्त युवा, उन्नत प्रौद्योगिकी और सतत दृष्टिकोण मिलकर भारत की ब्लू इकोनॉमी को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाएँगे।



## गृहिणी से एक्वाप्रेन्योर तक: श्रीमती सुजाता भुयान की प्रेरणादायक यात्रा और भा.कृ.अनु.परि.-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान की उत्प्रेरक भूमिका

ओडिशा के संबलपुर जिले स्थित हीराकुंड जलाशय में एक प्रेरणादायक बदलाव देखने को मिल रहा है, जिसकी केंद्र में हैं श्रीमती सुजाता भुयान। एक साधारण गृहिणी से सफल एक्वाप्रेन्योर बनने तक की उनकी यात्रा महिला सशक्तिकरण और ग्रामीण आजीविका के नए आयाम प्रस्तुत करती है।



परिवार की आय बढ़ाने की इच्छा से उन्होंने प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना (PMMSY) के तहत मत्स्य पालन शुरू किया और जलाशय में केज कल्चर तकनीक अपनाई। शुरुआती दौर में

जल गुणवत्ता, आहार प्रबंधन और पारिवारिक जिम्मेदारियों के संतुलन जैसी चुनौतियाँ सामने आईं, लेकिन उनके दृढ़ संकल्प ने उन्हें आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। उनकी सफलता में भा.कृ.अनु.परि.-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान की महत्वपूर्ण भूमिका रही। संस्थान द्वारा आयोजित “जलाशयों में केज कल्चर” प्रशिक्षण कार्यक्रमों ने उन्हें वैज्ञानिक मत्स्य पालन, जल प्रबंधन, आहार अनुकूलन और रोग नियंत्रण की व्यावहारिक जानकारी प्रदान की। इससे उनका आत्मविश्वास बढ़ा और उन्होंने अपने उद्यम का सफल विस्तार किया।

केवल 2-3 वर्षों में उन्होंने 25-30 मीट्रिक टन वार्षिक उत्पादन हासिल किया और ₹7-10 लाख की आय अर्जित की। उनकी उपलब्धि ने उन्हें अपने समुदाय की महिलाओं के लिए एक आदर्श बना दिया।

उनकी इस प्रेरणादायक यात्रा को राष्ट्रीय पहचान तब मिली जब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने ‘मन की बात’ में उनका उल्लेख किया। सुजाता भुयान की कहानी यह दर्शाती है कि वैज्ञानिक सहयोग, नीति समर्थन और दृढ़ इच्छाशक्ति के माध्यम से अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी क्षेत्र में अपार संभावनाएँ साकार की जा सकती हैं।

इस प्रकार के प्रभावशाली परिवर्तन पर विचार व्यक्त करते हुए, संस्थान के निदेशक डॉ. प्रदीप डे ने कहा:

**“ श्रीमती सुजाता भुयान की यात्रा इस बात का उत्कृष्ट उदाहरण है कि जब वैज्ञानिक हस्तक्षेपों को जमीनी स्तर पर प्रभावी ढंग से लागू किया जाता है, तो वे आजीविका को बदलने और ग्रामीण समुदायों को सशक्त बनाने में सक्षम होते हैं। जलाशय में केज कल्चर द्वारा मत्स्य उत्पादन और आय बढ़ाने की अपार संभावनाएँ हैं, विशेषकर महिलाओं और युवाओं के लिए। भा.कृ.अनु.परि.-सीआईएफआरआई में हमारा उद्देश्य केवल प्रौद्योगिकी विकसित करना ही नहीं, बल्कि क्षमता निर्माण, क्षेत्रीय प्रदर्शन और संस्थागत समन्वय के माध्यम से उनके प्रभावी प्रसार को सुनिश्चित करना भी है। उनकी सफलता विज्ञान, नीति समर्थन और मानवीय दृढ़ता के समन्वय का प्रमाण है, जो आत्मनिर्भर ग्रामीण अर्थव्यवस्थाओं के निर्माण में सहायक है।”**

श्रीमती सुजाता भुयान की यह कहानी केवल एक व्यक्तिगत सफलता नहीं है—यह समन्वय से प्रेरित परिवर्तन की एक सशक्त गाथा है। यह दर्शाता है कि किस प्रकार वैज्ञानिक संस्थान, प्रगतिशील नीतियाँ और दृढ़ संकल्प वाले व्यक्ति मिलकर अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी की विशाल संभावनाओं को साकार कर सकते हैं। हीराकुंड के लहराते जल में उनकी यह यात्रा निरंतर प्रेरणा देती है और असंख्य अन्य लोगों के लिए अवसरों की नई लहरें उत्पन्न करती है।

## अन्तर्स्थलीय मत्स्यिकी में रणनीतिक विमर्श और नवाचार: संस्थान के अनुसंधान सलाहकार समिति (RAC) बैठक में जलवायु-उन्मुख और समावेशी ब्लू इकोनॉमी संबंधित मुद्दों पर विचार मंथन



भाकृअनुप-केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मत्स्यिकी अनुसंधान संस्थान (ICAR-CIFRI) की अनुसंधान सलाहकार समिति (RAC) की बैठक डॉ. के. के. वास की अध्यक्षता में आयोजित की गई, जिन्होंने सिफरी, बैरकपुर और भाकृअनुप-केन्द्रीय शीतजल मत्स्य निदेशालय- ICAR-DCFR (वर्तमान में भाकृअनुप-केन्द्रीय शीतजल मत्स्यिकी अनुसंधान संस्थान) भीमताल के निदेशक के रूप में अपनी सेवाएँ दी हैं। उन्होंने संस्थान की प्रगति की समीक्षा के साथ अनुसंधान तंत्र को सुदृढ़ करने हेतु योजनाबद्ध सुझाव प्रदान किए, ताकि इसे संस्थागत प्राथमिकताओं के अनुरूप बनाया जा सके। डॉ. वास ने यह भी आश्वासन दिया कि समिति चल रहे अनुसंधान कार्यों को आगे बढ़ाने में उत्प्रेरक की भूमिका निभाएगी,

जिससे अनुसंधान परिणामों की गुणवत्ता, प्रासंगिकता और समग्र प्रभाव में वृद्धि होगी।

इस समिति के सदस्य के तौर पर प्रतिष्ठित विशेषज्ञों ने भाग लिया, जिनमें डॉ. अतुल कुमार सिंह, पूर्व निदेशक, ICAR-DCFR, भीमताल; डॉ. कृष्णा श्रीनाथ, पूर्व निदेशक, भाकृअनुप-केन्द्रीय कृषिरत महिला संस्थान (ICAR-CIWA), भुवनेश्वर; डॉ. रवी नारायण साहू, प्रधान वैज्ञानिक एवं कार्यक्रम लीडर, NePPA परियोजना, भाकृअनुप-भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान (ICAR-IARI), नई दिल्ली; डॉ. बी. के. शर्मा, पूर्व डीन, मत्स्य



महाविद्यालय, (MPUAT), उदयपुर; तथा डॉ. देविका पिल्लई, सहायक महानिदेशक (अन्तर्स्थलीय मत्स्यिकी), भारतीय कृषि अनुसंधान

परिषद शामिल थीं, जिन्होंने वर्चुअल माध्यम से बैठक में भाग लिया।



सिफरी के निदेशक डॉ. प्रदीप डे ने संस्थान की गत एक वर्ष की प्रमुख उपलब्धियों को प्रस्तुत किया। उन्होंने खुलाजल मत्स्यिकी विकास, नदी और जलाशय प्रबंधन को सुदृढ़ करने, मत्स्य भंडार आकलन में सुधार तथा जैव विविधता संरक्षण और हितधारक सशक्तिकरण पर प्रकाश डाला। उन्होंने जलवायु-लचीली तकनीकों जैसे ड्रोन और सेंसर-आधारित प्रणालियों को अपनाने में संस्थान के नेतृत्व की चर्चा की, जो ब्लू इकोनॉमी और वन हेल्थ फ्रेमवर्क के अनुरूप हैं तथा जिनका पारिस्थितिकीय स्थिरता, पोषण सुरक्षा, लैंगिक समानता

और आजीविका संवर्धन से जुड़े सतत विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने में अभिन्न योगदान है।

RAC के सदस्य सचिव, डॉ. अरुण पंडित ने पिछली बैठक की सुझावों पर कार्यवाही रिपोर्ट (ATR) प्रस्तुत किया। साथ ही, संस्थान के विभिन्न प्रभागों और क्षेत्रीय अनुसंधान केंद्रों के प्रमुखों ने भी अन्तर्स्थलीय मत्स्यिकी, पारिस्थितिकी तंत्र निगरानी तथा मछुआरों की आजीविका संवर्धन जैसे क्षेत्रों में प्रमुख उपलब्धियों, चालित अनुसंधान कार्यक्रमों और विकसित तकनीकों को प्रस्तुत किया।

इस महत्वपूर्ण बैठक के साथ-साथ विश्व जल दिवस 2026 का भी आयोजन किया गया, जिसमें जल और लैंगिक समानता के बीच संबंधों को रेखांकित किया गया। इस अवसर पर सिफरी द्वारा महिला-केंद्रित ब्लू इकोनॉमी और विकसित भारत@2047 के लिए किए जा रहे प्रयासों के बारे में बताया गया। बैठक के दौरान ड्रोन (अंडरवॉटर ड्रोन के साथ) का प्रदर्शन किया गया। समिति के अध्यक्ष और सदस्यों ने संस्थान की अनुसंधान प्राथमिकताओं को और सुदृढ़ करने हेतु रणनीतिक मार्गदर्शन प्रदान किया, अनुसंधान कार्यक्रमों के प्रभाव मूल्यांकन के महत्व पर भी जोर दिया तथा सतत अन्तर्स्थलीय मत्स्यिकी विकास के लिए सहयोगात्मक और बहु-विषयक अनुसंधान दृष्टिकोण को बढ़ावा देने का सुझाव दिया।



## एक्सपोजर विज़िट के माध्यम से क्षमता निर्माण: OUAT के KVK वैज्ञानिकों का ICAR-CIFRI दौरा



भा.कृ.अनु.परि.-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान (ICAR-CIFRI) ने 24 मार्च 2026 को ओडिशा कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय (OUAT) के अंतर्गत कृषि विज्ञान केंद्रों (KVKs) के वैज्ञानिकों के लिए एक दिवसीय एक्सपोजर विज़िट का आयोजन किया। इस कार्यक्रम में अंगुल, झारसुगुड़ा, गंजाम, केंद्रापाड़ा, भद्रक, बालासोर और नयागढ़ सहित विभिन्न KVKs से कुल नौ वैज्ञानिकों ने भाग लिया।

इस विज़िट का उद्देश्य प्रतिभागियों को अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान, नदियों, आर्द्रभूमि और जलाशयों में नवीन पद्धतियों तथा सिफरी द्वारा विकसित प्रौद्योगिकी प्रसार तंत्र से परिचित कराना था। इससे प्रतिभागियों की

सतत मात्स्यिकी प्रबंधन और संवर्धन आधारित मात्स्यिकी (कल्चर-बेस्ड फिशरीज) की समझ मजबूत हुई। साथ ही, संस्थागत सहयोग को बढ़ावा देने पर बल दिया गया, ताकि तकनीकों का प्रभावी हस्तांतरण किसानों और मछुआरों तक हो सके।

कार्यक्रम के दौरान विभिन्न प्रभागों के प्रमुखों ने अनुसंधान गतिविधियों, संसाधन आकलन, मत्स्य संवर्धन, जलीय प्रदूषण निगरानी और रोग प्रबंधन पर जानकारी साझा की। GIS, ड्रोन और R-आधारित विश्लेषणात्मक उपकरणों के उपयोग पर भी प्रकाश डाला गया। इसके अतिरिक्त, पेन एवं केज कल्चर तकनीकों के महत्व को भी रेखांकित किया गया।

### सेवानिवृत्ति

डॉ. संजय कुमार दास, प्रधान वैज्ञानिक (नदी और आर्द्रछेत्र मात्स्यिकी प्रभाग), अपने उत्कृष्ट कार्य, समर्पण और वैज्ञानिक उपलब्धियों के लिए व्यापक रूप से जाने जाते हैं। 01 अप्रैल 1964 को जन्मे डॉ. दास ने 20 फरवरी 1995 को NAARM, हैदराबाद में वैज्ञानिक के रूप में अपने करियर की शुरुआत की। इसके पश्चात उन्होंने ICAR-IGFRI, झांसी तथा ICAR-CIFRI, बैरकपुर जैसे प्रतिष्ठित संस्थानों में अपनी सेवाएँ देते हुए निरंतर प्रगति की और विभिन्न पदोन्नतियों के माध्यम से प्रधान वैज्ञानिक के पद तक पहुँचे।



अपने लंबे और समृद्ध सेवा काल में डॉ. दास ने मात्स्यिकी एवं संबंधित क्षेत्र में अनेक महत्वपूर्ण शोध कार्य किए, जिनसे न केवल वैज्ञानिक जगत को नई दिशा मिली, बल्कि व्यावहारिक स्तर पर भी इनका व्यापक लाभ हुआ। उनके

शोध कार्यों में नवाचार, वैज्ञानिक दृष्टिकोण और जमीनी समस्याओं के समाधान की स्पष्ट झलक दिखाई देती है।

डॉ. दास अपने सहकर्मियों एवं अधीनस्थों के साथ मधुर और सौहार्दपूर्ण संबंध बनाए रखने के लिए भी जाने जाते हैं। उनका सहयोगी स्वभाव, मार्गदर्शन देने की प्रवृत्ति और टीम भावना उन्हें एक आदर्श सहकर्मी बनाती है। वे सदैव युवा वैज्ञानिकों के लिए प्रेरणा स्रोत रहे हैं। 31 मार्च 2026 को सेवानिवृत्त हुये डॉ. दास का संस्थान के विकास में दिया गया योगदान सदैव स्मरणीय रहेगा। उनकी सेवाएँ, अनुभव और मार्गदर्शन आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का स्रोत बने रहेंगे। हम उनके स्वस्थ, सुखद एवं सक्रिय जीवन की कामना करते हैं।

### प्रकाशनमंडल

प्रकाशक: प्रदीप डे, निदेशक,

संकलन एवं सम्पादन: संजीव कुमार साहू, प्रवीण मौर्य, सुनीता प्रसाद एवं सुमेधा दास

फोटोग्राफी: सुजीत चौधरी एवं सम्बंधित वैज्ञानिक।

भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, (आईएसओ 9001: 2015 प्रमाणित संगठन), बैरकपुर, कोलकाता, पश्चिम बंगाल 700120, भारत

दूरभाष: +91-33-25921190/91; फ़ैक्स: +91-33-25920388; ई-मेल: [director.cifri@icar.org.in](mailto:director.cifri@icar.org.in); वेबसाइट: [www.cifri.res.in](http://www.cifri.res.in)